उत्पत्ति १८ एवं १९
यहोवा और दो दूत

- परमेश्वर का स्वभाव और सार क्या है?
- मसीह के बाद दो सौ वर्ष तक त्रिएक (तीन व्यक्तियों) का सिद्धान्त नहीं आया था।
- **<u>अथनासियाई विश्वास-पत्र:</u> "...हम एक परमेश्वर की त्रिएक रूप में आराधना करते हैं; ...एक व्यक्ति पिता, दूसरा पुत्र, और तीसरा पवित्र आत्मा..."**

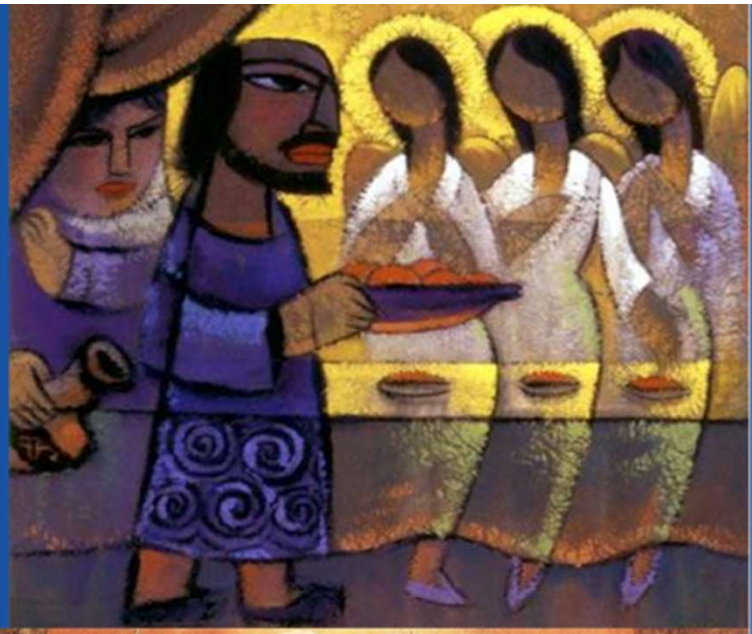

प्रारम्भिक कलीसिया और शेमा

- वे परमेश्वर को “तीन व्यक्तियों” के समूह के रूप में नहीं सोचते थे।
- **<u>व्यवस्थाविवरण ६:४</u> “हे इस्राएल, सुन! यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक ही है।”**
- **<u>मरकुस १२:२९</u> यीशु ने उत्तर दिया, “सबसे पहली आज्ञा यह है, ‘हे इस्राएल, सुन! हमारे परमेश्वर यहोवा एक ही यहोवा है।’”**

परमेश्वर के नाम

- हमें परमेश्वर के नामों को पुनःस्थापित करना चाहिए!
- “प्रभु” और “परमेश्वर” सामान्य शब्द हैं।
- जब “प्रभु” और “परमेश्वर” शब्दों का प्रयोग होता है, तब हम कैसे जानें कि यह “परमेश्वर” की बात हो रही है या “यीशु” की?
- इब्री शास्त्रों में परमेश्वर का नाम **यहोवा** प्रकट होता है।
- यह “परमेश्वर” या “प्रभु” शब्दों में अनुवादित नहीं होता।

९९% बार हमारी बाइबिलों में जहाँ “परमेश्वर” या “प्रभु” लिखा होता है, वहाँ वास्तव में यहोवा ही लिखा है!

- **अदोनाय** इब्री भाषा में “प्रभु” के अर्थ में प्रयुक्त होता है।
- यह बात ईसाई और इब्री विद्वानों में विवादित नहीं है।

- **शेमा का मूल इब्री रूप (व्यवस्थाविवरण ६:४): शेमा , यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक है।**

- **शेमा का पारम्परिक रूप: शेमा , अदोनाय हमारा परमेश्वर है, अदोनाय एक है।**

परमेश्वर का नाम (यहोवा) पुनः स्थापित करने से सिद्धान्त सम्बन्धी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं

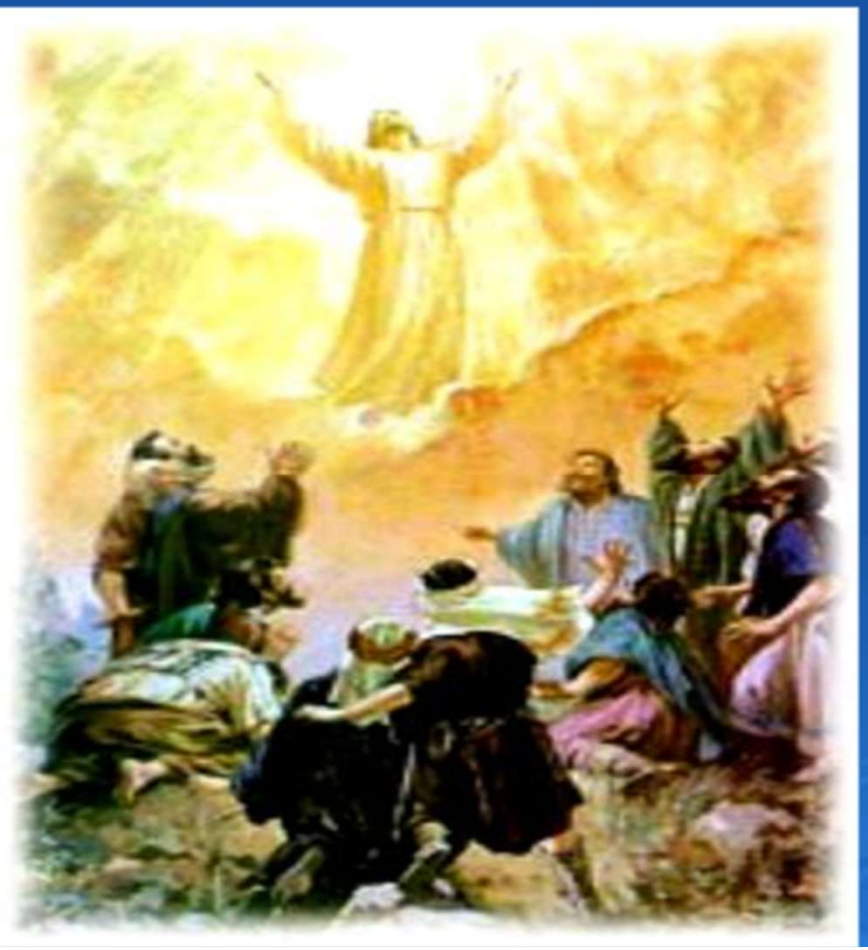

- **प्रेरितों के काम १:११ "गलील के मनुष्यों, तुम आकाश की ओर ताकते क्यों खड़े हो? यह यीशु, जो तुम्हारे पास से स्वर्ग में उठा लिया गया है, तुमने जिस रीति से उसे स्वर्ग जाते देखा है, उसी रीति से वह फिर आएगा।"**
- वह जिस रीति से गया, उसमें ये बातें शामिल हैं:

१) **रूप** – परमेश्वर/मनुष्य यीशु का रूप
२) **स्थान** – जैतून का पहाड़
३) **मार्ग** – आकाश की ओर, बादलों में

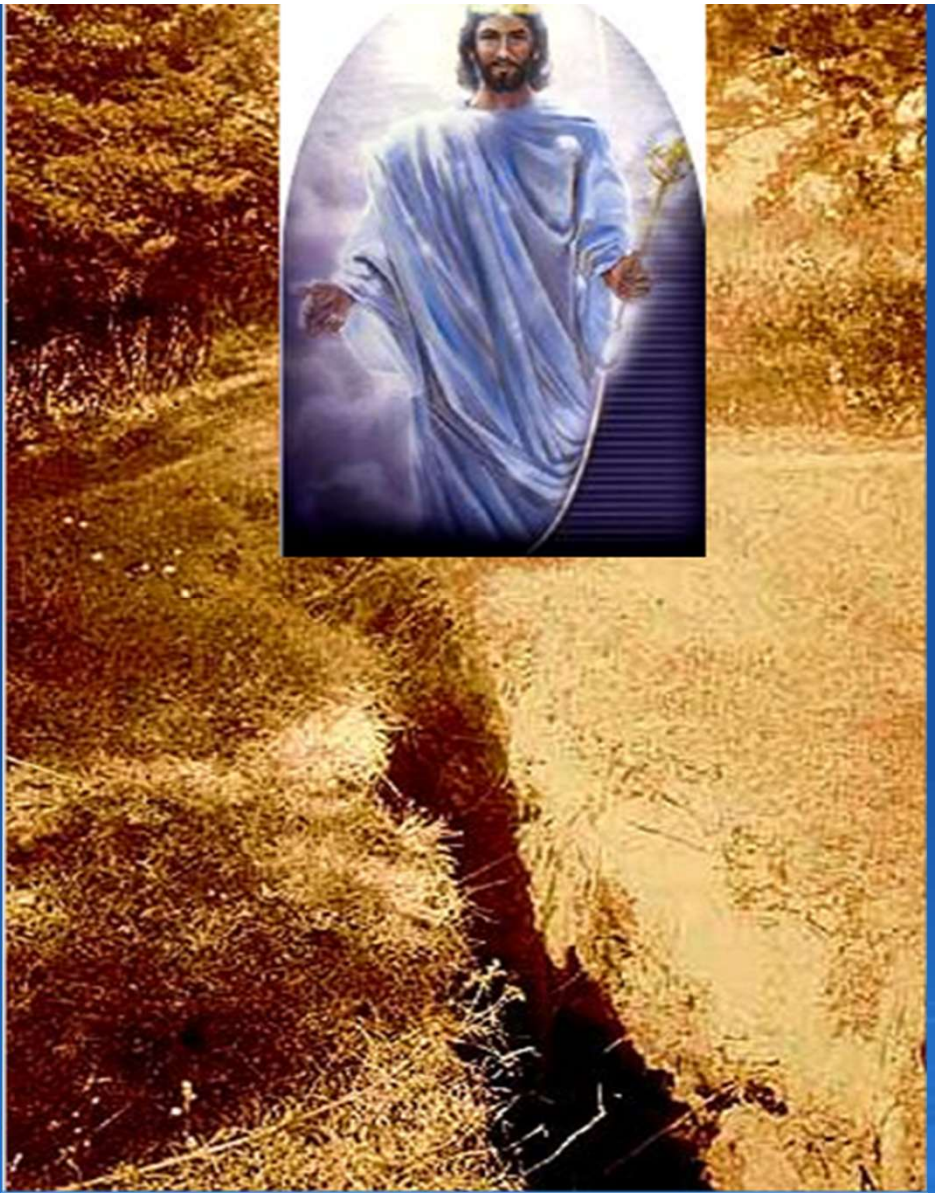

जैतून पर्वत का फटना नए नियम (एन.टी.) में नहीं है; यह पुराने नियम (ओ.टी.) में है।

- उसका पुनरागमन जकर्याह अध्याय चौदह (१४) की भविष्यवाणी की पूर्ति है।
- सामान्यतः यह माना जाता है कि यह पद अन्त-काल की घटनाओं तथा प्रभु के आगमन की ओर संकेत करता है।

जकर्याह १४ कहता है कि य-ह-व-ह (यहोवेह) ही जैतून पर्वत पर उतरते हैं!!

- हमने प्रायः हर स्थान पर केवल "यीशु" को ही जोड़कर समझ लिया है।
- परन्तु इब्रानी मूल पाठ में "य-ह-व-ह" लिखा है।
- पद नौ (९) में कहा गया है: "वह एहाद है" अर्थात् "एक"।
- यह विशेषण सदैव परमेश्वरत्व (ईश्वरत्व) की सम्पूर्णता के लिए प्रयुक्त किया जाता है।
- उसी को हम "परमेश्वर" कहते हैं।

परमेश्वर का एक अधिक पवित्रशास्त्रीय प्रतिरूप

- गुण (विशेषताएँ)
- बेकी को उसके गुणों से अलग नहीं किया जा सकता।
- मैं उसके गुणों के विषय में अलग-अलग बात कर सकता हूँ।
- हम उसके एक गुण को हटाकर शेष गुणों को बने रहने नहीं दे सकते।
- बेकी नाम के व्यक्तियों का कोई बड़ा समूह नहीं है!!

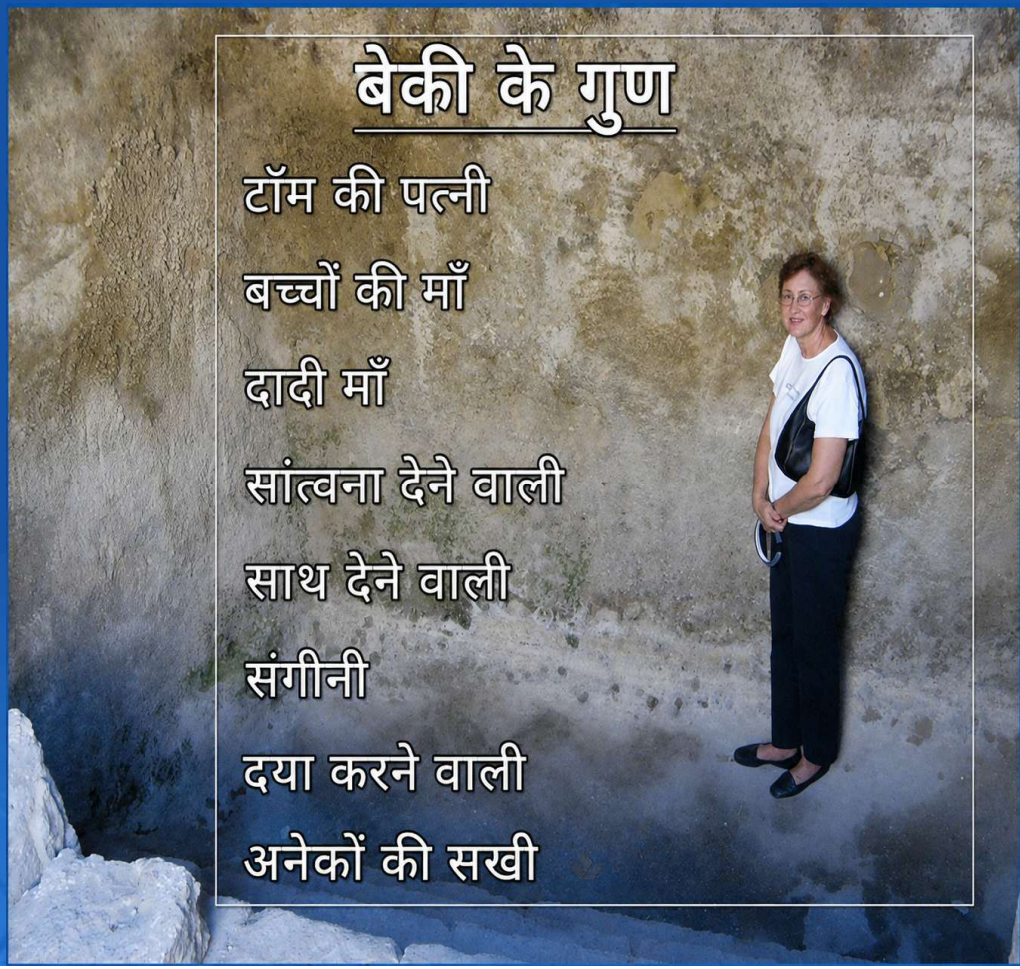

“३ व्यक्तियों” का सिद्धांत

- हमें इस संदिग्ध और पवित्रशास्त्र-विरुद्ध सिद्धांत की पुनः जाँच करनी चाहिए।
- “लेफ्ट बिहाइंड” एक काल्पनिक कथा है!
- यह परमेश्वर की प्रकृति–पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा–को चुनौती देने का प्रयास नहीं है।

- यह व्यक्तियों को अलग करता है।
- यह कार्यों (भूमिकाओं) को अलग करता है।
- “तीन व्यक्तियों” के सिद्धांत का तर्कसंगत निष्कर्ष:
  यदि मसीह पृथ्वी पर थे, तो स्वर्ग में परमेश्वर केवल २/३ भाग ही पूर्ण थे!

यहोवेह के गुण

पिता

पुत्र

पवित्र आत्मा

कार्य

पिता	"योजना" के महान लेखक
पवित्र आत्मा	"योजना" के पात्र और संदेशवाहक
पुत्र	"योजना" के महान कार्यकर्ता

कार्य (भूमिकाएँ)

आत्मा : उसकी योजनाओं की रचयिता

मन : उसकी योजनाओं का जानने वाला, संभालने वाला और संदेशवाहक

शरीर : उन योजनाओं को करने वाला

- **आत्मा** उसकी वह शाश्वत भाग है जो उसे आध्यात्मिक से जोड़ती है।
- **शरीर** उसकी वह भौतिक भाग है जो उसे भौतिक से जोड़ती है।
- **मन** इन दोनों को जोड़ता है।

परमेश्वर के गुण उसके "नामों" में समाहित हैं

एल (ई एल) सर्वशक्तमान

एल शद्दाई सर्व-पर्याप्त

यहोवा यिरहे प्रदाता

यहोवा राफा चंगाई देने वाला

यहोवा शालोम हमारी शांति

एल रोई जो देखता है

यहोवा सिदकेनू हमारी धार्मिकता

यहोशूआ (याह-शूआ) परमेश्वर उद्धार करता है

परमेश्वर

गुण (विशेषताएँ)

पिता, पुत्र,

पवित्र आत्मा

पुत्र का कार्य (भूमिका)

योजनाओं का पूर्ण करने वाला

नाम: यहोशुआ

(परमेश्वर – उद्धार करता है)

आध्यात्मिक – स्वर्गीय लोक

पवित्र आत्मा का कार्य

संदेशवाहक/ धारक (पात्र)

मनुष्य पृथ्वी पर योजनाओं को पूर्ण करने वाला

भौतिक – पृथ्वी संबंधी लोक

द्वैत की वास्तविकता

आध्यात्मिक – स्वर्गीय लोक

यहोशुआ
स्वर्गीय शरीर

विश्वासी
स्वर्गीय शरीर

पहले फल

पुनरुत्थान!

अंतिम एकत्रीकरण

यहोशुआ
पार्थिव शरीर

विश्वासी
पार्थिव शरीर

भौतिक – पार्थिव लोक

लूत नगर-द्वार पर

- अतिथियों को बड़ा सम्मान दिखाना उस समय की सामान्य और प्रचलित रीति थी।
- नगर-द्वार ही परकोटे से घिरे नगर में प्रवेश का एकमात्र मार्ग था।
- द्वार में मीनारें और पहरेदारों के कक्ष होते थे। नगर-द्वार "नगर-चौक" के समान कार्य करता
- था।
  लूत ने अपने "अतिथियों" के लिए खाने हेतु
- अखमीरी रोटियाँ (मत्साह) तैयार कीं।
  यह शीघ्रता में तैयार किए गए भोजन का
- प्रतीक है।

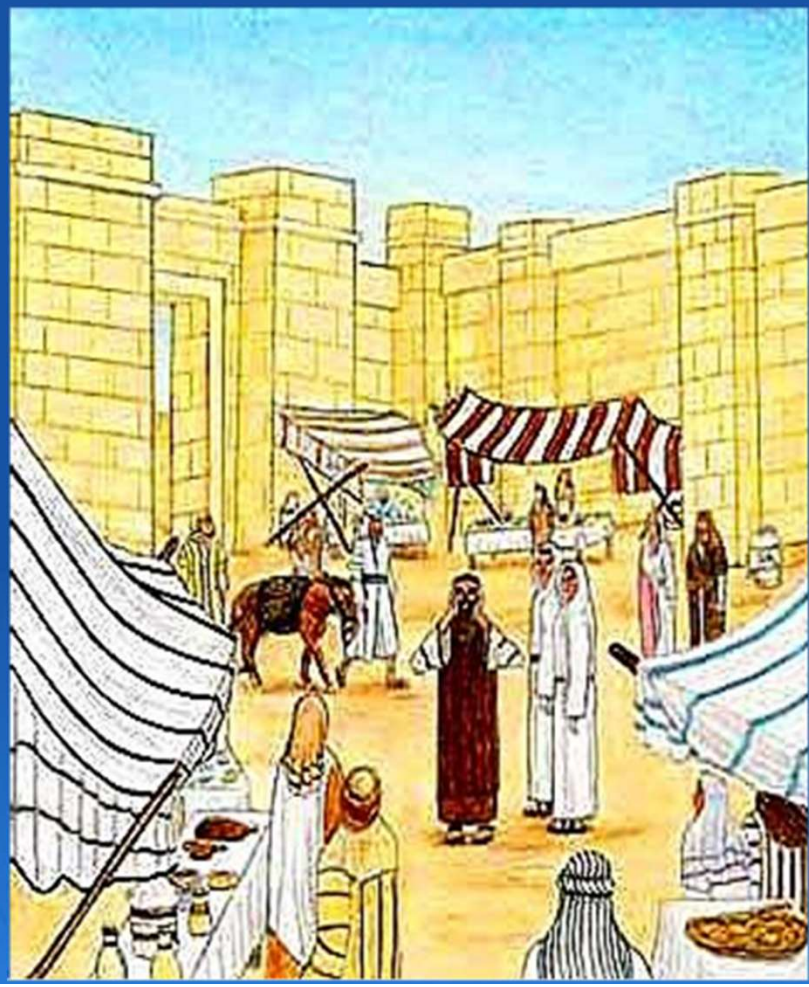

सदोम का अधर्म क्या था?

- वह अधर्म: समलैंगिकता थी।
- यह पाप इतना घोर था कि परमेश्वर पूरे क्षेत्र का विनाश करने वाले थे!
- यह एकमात्र पाप है जिसका यहाँ उल्लेख किया गया है।
- विश्वासियों का यह कर्तव्य है कि वे य-ह-व-ह (यहोवेह) के विरुद्ध किए जाने वाले इस भयंकर पाप का विरोध करें।